

B. A. Part-I paper-II

Dr. Ramesh Kumar
 Director (B.A. Part-I)
 R. D. R. College

कॉलोनीयल की वैदेशिक नीति का मूल्यांकन करें।

अंतर्गत कथित है कि कॉलोनीयल की इस प्रकार की नीति निम्न-असंगत और नागरिकता के लोगों की आकांक्षाओं को निराश करने के लिए कुलीकरण की नीति का पालन करना कॉलोनीयल की एक छल थी। कॉलोनीयल की इस नीति की असमर्थता शीघ्र ही प्रकटित हो गयी क्योंकि द्वितीय ने मार्च 1937 ई. के मुम्बई सम्मेलन को मंजूर कर पाकर पर आक्रमण किया और बोहेमिया तथा गुआनिमा पर अधिकार कर लिया। शीघ्र ही द्वितीय ने मेमेल पर भी अधिकार कर लिया। द्वितीय अब केवल छद्म का बहाना खोज रहा था और शीघ्र ही उसने 1 सितम्बर 1939 ई. को पोलैंड पर आक्रमण करके छद्म का भी गोलशार्क कर दिया। जर्मन उद्दिष्टों को कॉलोनीयल ने भी गर्वनी के विरुद्ध छद्म की घोषणा कर दी क्योंकि कॉलोनीयल इस समय से पूर्व ही पोलैंड समाधिमा लेकर इतनी से लगभग कर चुका था। कॉलोनीयल 1919 ई. में स्थापित की गयी शान्ति को उगार खाने में समर्थ न हो सका और यही कारण था कि उसे बीस वर्षों उपरांत उस असमर्थता के कारण छद्म लड़ना पड़ा।

कॉलोनीयल व्यवस्था कुलीकरण की नीति का पालन करता आ रहा और नागरिकता को इस बात की सूचना दे सका कि शान्ति की स्थापना के लिए कॉलोनीयल विनाश की संकीर्ण के छद्म भी कर सकता है। लामस गार्ज ने इटली द्वारा आनीसीनिया पर आक्रमण के समय ही कहा था कि नीति से पहला स्थान शक्ति का ही मिलेगा। मॉरिगोसल ने मुला हिमस है। उस समय प्रजावांजित सरकार को मिलाकर प्रकालीन राजनीतिक स्थिति का शक्ति से सामना करना चाहिए था। परन्तु यह सत्य है कि कॉलोनीयल के नागरिकों की विचारधारा छद्म विरोधी थी। कॉलोनीयल की कोई भी गलत छद्म नहीं चाहती थी। इसी कारण कॉलोनीयल के राजनीतिक प्रत्येक संकट का सामना करने हुए भी छद्म को रालने का प्रयत्न करते रहते। इसके आन्तरिक कॉलोनीयल को गर्वनी से सीधे छद्म विरोधी थी। इसका प्रमुख कारण छद्म गर्वनी राजनीतिकों के द्वारा कॉलोनीयल का विनाश प्राप्त कर लिया जा रहा था, किन्तु इस प्रकार की उदरगति वैदेशिक नीति से कॉलोनीयल की दुर्बलता भी प्रकट हो गई थी। समग्र विश्व को द्वितीय विश्व युद्ध के कारण हानि उठानी पड़ी।